

---

viShNustuti from Maheshvara tantra

श्रीविष्णुस्तुतिः अथवा श्रीजगन्नाथस्तुतिः

Document Information

---

Text title : Vishnustuti from Maheshvaratantra

File name : viShNustutiHmAheshvaratantra.itx

Category : vishhnu

Location : doc\_vishhnu

Transliterated by : Yogesh K Sharma yosharma at gmail.com

Proofread by : Yogesh K Sharma yosharma at gmail.com

Translated by : Sudhakar Malaviya

Description/comments : Maheshwara Tantra Jnanakhanda tRitIya paTalaM Verses 95-98

Latest update : May 27, 2019

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 17, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीविष्णुस्तुतिः अथवा श्रीजगन्नाथस्तुतिः



नमो मत्स्यकूर्मादिनानावतारैर्जगद्भ्रक्षणायोधतायात्तिष्ठत्रे ।

जगद्भ्रन्धवे बन्धुर्त्रे य भर्त्रे जगद्भ्रिष्ववोपस्थितौ पालयित्रे ॥ १ ॥

हे भगवन् ! हे मत्स्य एवं कूर्म आदि नाना प्रकारके अवतारों को धारण करके जगत्की रक्षाके लिये उद्यत रहकर सभीके दुःखों का नाश करने वाले ! हे जगत्के बन्धु ! हे कर्म बन्धनोंके उर्ता ! हे भर्ता ! हे और दारुण कष्टोंके उपस्थित होने पर जगत् का पालन करने वाले ! आपकी प्रणाम है ॥ १ ॥

यदा वेदपन्थास्त्वदीयः पुराणः प्रभज्येत पाप्मण्डयण्डोऽग्रवादैः ।  
तदा देवदेवेश सत्त्वेन सत्त्वं वपुश्चारु निर्माय रक्षां विधत्से ॥ २ ॥

जब आपका पुरातन वैदिक [ सनातन ] धर्म उग्र पापण्डियोंके द्वारा छिन्न-भिन्न कर दिया जाता है तब आप, हे देवदेवेश, सत्त्व गुण से सत्त्वमय सुन्दर शरीर धारण करके हम सबकी रक्षा करते हैं ॥

२ ॥

भूम्यम्बुतेजोनिलभात्मकं यत् ब्रह्माण्डमेतत्प्रविशन्निय त्वम् ।  
चराचरं ज्व एति प्रसिद्धिं गतोऽसि तस्मान्न भवत्परं यत् ॥ ३ ॥

भूमि, जल, अग्नि, वायु, और आकाश रूप जो ब्रह्माण्ड है वह सब तुम्हारेमें मानो प्रविष्ट है। वस्तुतः समस्त चराचर जगत् और ज्वके रूपमें आप ही भासित होते हैं। इसलिये आपसे अलग कोई श्रेष्ठ तत्त्व नहीं है ॥

३ ॥

रक्षस्व नाथ लोकांस्त्वं तपसोऽग्रेण पद्मया ।  
दृष्यमानान् गतानन्दान् रक्षितासीश्वरो यतः ॥ ४ ॥

अतः हे नाथ ! आप भगवती रमाके द्वारा किसे गये उग्र तपस्या से जलने

वाले ँन लोकोँकी रक्षा करेँ, ङयोँडि आप ङी ँनकी रक्षा करनेमें समर्थ  
हुँ ॥ ९८ ॥

एति श्रीनारदपुत्ररात्रे माहेश्वरतन्त्रे उत्तरभाष्ये  
देवगाणप्रोक्ता श्रीविष्णुस्तुतिः समाप्ता ।

Verses 95-98 from Maheshvaratantra uttarakhanda tRRitIya paTalaM

Encoded and proofread by Yogesh K Sharma yosharma at gmail.com

---

—  
*viShNustuti from Maheshvara tantra*  
pdf was typeset on September 17, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

